प्रथम छः अध्यायों में जीव को अप्राकृत आत्मतत्त्व कहा गया है, जो विविध योगपद्धतियों के द्वारा स्वरूप-साक्षात्कार कर सकता है। छठे अध्याय के अन्त में निश्चित उल्लेख है कि श्रीकृष्ण में मन की अचल एकाग्रता, अर्थात् कृष्णभावना परमोच्च योगपद्धति है। मन को श्रीकृष्ण में एकाग्र करने से ही परतत्त्व का सम्पूर्ण ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं। निर्विशेष ब्रह्मज्योति तथा एकदेशीय परमात्मा विष्णु की अनुभूति परतत्त्व का पूर्ण ज्ञान नहीं है। श्रीकृष्ण पूर्ण विज्ञान हैं; अतएव कृष्णभावनाभावित भक्त को सम्पूर्ण तत्त्व स्फुरित हो जाता है। पूर्ण कृष्णभावनाभावित पुरुष को यह निश्चित प्रबोध हो जाता है कि श्रीकृष्ण ज्ञान की अवधि हैं। विविध योग पद्धतियाँ तो कृष्णभावनामृत-पथ की प्रवेशिका मात्र हैं। जिसने सीधे कृष्णभावनामृत के पथ को ग्रहण कर लिया है, वह ब्रह्मज्योति एवं परमात्मा के सम्बन्ध में अपने आप सब कुछ जान जाता है। सारांश में, कृष्णभावना-योग के अभ्यास से परतत्त्व जीवतत्त्व, मायातत्त्व और इनके द्वारा अभिव्यञ्जित अन्य सब तत्त्वों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है।

अस्तु, छठे अध्याय के अन्तिम श्लोक के निर्देशानुसार योग का अभ्यास प्रारम्भ कर देना चाहिए। नवधाभक्ति करने से मन अपने-आप भगवान् श्रीकृष्ण के अभिराम ध्यान में एकाग्र रहेगा। भक्ति की इन विधियों में श्रवण करना सर्वप्रधान है। इसीलिए श्रीभगवान् ने अर्जुन को सम्बोधित करते हुए कहा है: **तच्छृणु** 'मुझसे सुन।' भगवान् श्रीकृष्ण परम प्रमाण हैं। अतः उनके मुखचन्द्र से निस्यन्दित वचनामृत को श्रवण करना कृष्णभावनामृत में प्रगति करने का सर्वोत्तम सुयोग है। इस कारण भगवत्-तत्त्व की शिक्षा साक्षात् श्रीकृष्ण अथवा उनके शुद्ध भक्त से ही ग्रहण करनी चाहिए, विद्वत्ता के घमण्डी धूर्त अभक्त से नहीं।

श्रीमद्भागवत, प्रथम स्कन्ध, द्वितीय अध्याय में परतत्त्व भगवान् श्रीकृष्ण को जानने की पद्धति का वर्णन है:

शृण्वतां स्वकथां कृष्णः पुण्यश्रवण कीर्तनः।
हृद्यन्तःस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम्।।
नष्टप्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवतसेवया।
भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी।।
तदा रजस्तमोभावाः कामलोभादयश्च ये।
चेत एतैरनाविद्धं स्थितं सत्त्वे प्रसीदति।।
एवं प्रसन्नमनसो भगवद्भक्तियोगतः।
भगवत्तत्त्वविज्ञानं मुक्तसंगस्य जायते।।
भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि दृष्ट एवात्मनीश्वरे।।

'वैदिक शास्त्रों से श्रीकृष्ण की कथा सुनने अथवा भगवद्गीता के रूप में साक्षात् श्रीकृष्ण से उनकी कथा को सुनने मात्र से पुण्य होता है। प्राणीमात्र के